प्रात: क्लास ओमशान्ति 18-9-67

रिकार्ड:- तू प्यार का सागर है:- ओमशान्ति। ज्ञान और अज्ञान । तुम बच्चों में अभी ज्ञान है। भक्त लोग महिमा किसकी करते हैं और तुम बच्चे जो यहाँ बैठे हो तुम किसकी महिमा सुनते हो। रात दिन का फर्क है। वह तो ऐसे ही सिर्फ महिमा गाते है। इतना प्यार नहीं है। क्योंकि पहचान नहीं है। तुमको बाप ने पहचान दी है। मैं प्यार का सागर हूँ। और तुमको प्यार का सागर बनाये रहा हूँ। बाप प्यार का सागर कितना सब को प्यारा लगता है। वहाँ भी सब एक दो को प्यार करते हैं। यह तुम यहाँ सिखते हो। किस के साथ भी विरोध न होना चाहिए। जिसको बाबा लुन पानी कहते हैं। अन्दर में किसके लिए नपरत न होनी चाहिए। नपरत करने वाले गोया कलयुगी नर्कवासी है। नपरत नहीं करते हैं, जानते हो हम सभी भाई बहन है। भाई2 तो है शान्ति धाम में। यहाँ जब पार्ट बजाते है कर्मक्षेत्र पर तो बहन- भाई है। ईश्वर के सन्तान है। ईश्वर की तो महीमा है वह ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। सुख का सागर है। माना सब को सुख देते है। तुम सब दिल से पूछो जैसे बाप भविष्य 2। जन्मों लिए सुख देते है वैसे हम भी वह कार्य करते है। अगर बाप का मददगार नहीं बनते प्यार नहीं करते, एक दो से विप्रीत बुधि चलते हैं तो विनश्यन्ती हो जाते। विप्रीत बुधि हाना असुरों का काम है। अपने को ईश्वरीय सम्प्रदाय कहलाये और फिर एक दो को दुख देना, इनको असुर कहा जाता है। तुम बच्चों को किसको भी दुख न देना है। तुम हो ही दुख हर्ता, सुख कर्ता। दुख देने का ख्याल तक भी तुमको न आना चाहिए। वह अपने को असुर सम्प्रदाय समझे न कि ईश्वरीय सम्प्रदाय। क्योंकि देहाभिमान है। कब याद की यात्रा में रह न सके। याद की यात्रा बिगर कब कल्याण होना न है। वर्सा देने वाले बाप को जरूर याद करना है। तो विकर्म विनाश होंगे। आधा कल्प एक दो को दुख देते आये हो। जो एक दो में लड़ते तंग करते है रहते है वह आसुरी सम्प्रदाय में गिने जाते हैं। [illegible] पुरुषार्थी है तो भी कब तक [illegible] इसलिए बाबा कहते है अपना चार्ट रखो। चार्ट रखने से मालूम पड़ेगा, हमारा रजिस्टर सुधरता जाता है या वहाँ आसुरी चलन है। बाबा सदैव कहते हैं किसको दुख न दो। निंदा, स्तुति, मान- अपमान, ठंडी गर्मी सब सहन करना है। कोई ने कुछ कहा तो शांत रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि उनके लिए दो कहन और कह देना। कोई किसको दुख देते है तो बाप जरूर समझावेंगे। बच्चे बच्चे को नहीं कह सकते। अपने हाथ में ला नहीं लेना है। कुछ भी बात है तो बाप के पास आना है। गवर्मेन्ट में भी यह कायदा है कोई एक दो को घुसा नहीं मार सकते। कम्पलेन्ट कर सकते है। ला उठाना गवर्मेन्ट का काम है। तुम भी गवर्मेन्ट पास आओ। हाथ में ला न लियो। यह तो है ही अपना घर। इसलिए बाबा कहते रहते है राज कचहरी होनी चाहिए। यह भी समझते नहीं हैं। शिव बाबा आर्डर करते है। बाबा ने कहा है हमेशा: समझो शिव बाबा सुनाते हैं। ऐसे मत समझो ब्रह्मा समझाते है। हमेशा शिव बाबा ही समझो। तो उनकी याद रहेगी। समझो ब्रह्मा भूत है। यह शिव बाबा ने रथ लिया है तुमको ज्ञान सुनाने लिए। सतोप्रधान बनने का रास्ता बाप समझाये रहे है। वह है गुप्त। तुम हो प्रत्यक्ष। जो भी डायरेक्शन निकलती है समझो शिव बाबा ही देते हैं। उल्टा सुल्टा होगा तो रेस्पान्सिबल शिव बाबा हैं। तुमको तो कोई हर्जा नहीं। तुम सेफ रहेंगे। इनका समझने से फिर देहाभिमान में आये उल्टा कर्म करते रहते हैं। ईश्वर के आगे रहने वालों से तो कोई विकर्म न होना चाहिए। परन्तु इतना रिगार्ड रखना जानते हो नहीं। बाप के आगे कैसे चलन होनी चाहिए, राजाओं के आगे राजकुमार कैसे चलते है। आजकल तो वह भी तमोप्रधान बन गये हैं। बाप को भी इज्जत लेने देरी नहीं करते। तुम तो ईश्वरी दुनिया के बनते हो। बाबा बाबा शिव को ही कहते हैं। वर्सा भी उनसे ही मिलता है। वह अभी दादा के तन में है। उनके साथ कितना रिगार्ड, रायलटी से चलना चाहिए। तुम कहते हो ना बाबा हम तो लक्ष्मी नारायण बनेंगे। फिर सेकन्ड नम्बर बने, थर्ड बने, सूर्यवंशी न बने तो चन्द्रवंशी बने। ऐसे तो नहीं हम हम भल दास-दासी घोड़े गधे बनें। पूजा बनना तो जैसे घोड़े गधे हो कहेंगे। तुमको तो यहाँ दैवी गुण धारण करने है। आसुरी चलन

न होनी चाहिए। ऐसे भी हैं थोड़ा कुछ समझावेंगे तो उल्टा सुल्टा बोलने लग पड़ेंगे। निश्चय तो है ब्रह्मा न हो। कोई2 भी कह देते इन में शिव बाबा आते हैं, हम तो नहीं समझते। माया का भूत आने से आपस में ऐसे2 कह देते। भगवान इन के शरीर में क्या पढ़ावेंगे। आपस में आसुरी स्वभाव वाले मिलते हैं तो फिर ऐसे बोलने लग पड़ते हैं। आसुरी बातें ही जबानी से निकलती हैं। बाप कहते हैं तुम आत्माएं बसंत हो। तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलनी चाहिए। अगर पत्थर निकलती हैं तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे। गीत भी बच्चों ने सुना। बच्चे कहते हैं बाबा प्यार का सागर, सुख का सागर है। शिव बाबा की ही महिमा है। बाप कहते हैं तुम अपन को आत्मा समझो, बाप को याद करो। इसमें बहुत अच्छे2 फेल हो जाते हैं। देहीअभिमानी में ठहर न सकते। देहीअभिमानी बनेंगे तब ही इतना ऊंच बनेंगे। बहुत टाइम वेस्ट करते हैं। फालतू बातों में। ज्ञान की बात ही ध्यान में नहीं आती। यह भी गायन है घर की गंगा का मान नहीं रखते। घर के चित्र का इतना मान नहीं रखते। जब कि कृष्ण आदि का चित्र घर में है फिर श्रीनाथ द्वारे आदि इतना दूर 2 क्यों जाते हैं। चित्र तो वही है फिर दर्शन करने इतना दूर भटकते क्यों हैं। वहां मंदिर सुहेणा (सुन्दर) देखते हैं तो उन से लव हो जाता है। भक्ति मार्ग देखो कितना चर्या खर्चा है। शिव की पूजा तुम घर में बैठ करो, इतना दूर2 क्यों जाते हो। है तो पत्थर का ही लिंग। पहाड़ से पत्थर निकलते हैं। वह घिस2 कर लिंग बन जाती हैं। उन में कोई पत्थर में सोना भी लगा हुआ होता है। कहा जाता है सोने का कैलाश पर्वत। सोना पहाड़ों से निकलता है। तो थोड़ा2 सोना लगे हुए पत्थर भी होते हैं। फिर जो बहुत अच्छा गुल2 होता है वह बेचते हैं। मारबल का भी खास बनाते हैं। अब भक्ति मार्ग वालों को कहा कि तुम बाहर में इतना भटकते क्यों हो। तो बिगड़ पड़ेंगे। बाप खुद कहते हैं तुम बच्चों ने बहुत पैसे बरबाद किये हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। जो तुम को धक्का खाना पड़ा है। यह है ही भक्ति दुर्गति मार्ग। ज्ञान है सदगति मार्ग। बाप सब को सदगति करते हैं। फिर क्या चीज है जिस से तुम दुर्गति को पाते हो। यह खेल ही है ज्ञान और भक्ति का। बहुत कहते हैं ज्ञान, भक्ति, वैराग्य। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। शंकराचार्य ने भी कहा भगवान भी आदर करें क्यों शास्त्र न पढ़ो तो भी हम नहीं मानेंगे। भक्ति का कितना जोर है। बहुत आते हैं ज्ञान में आने बाद अगर धंधे आदि में घाटा पड़ गया तो तो फिर देवों के पास जाते हैं। वर लेने। फिर यहां से छूट जावेगा। यहां आशीर्वाद की कोई बात नहीं। भक्ति मार्ग प्रार्थना आदि करते हैं, कृपा करो हमारा बच्चा ठीक हो जावे। यह ठीक हो जाये। भक्ति मार्ग में फल मिलता है परन्तु अल्प काल क्षणभंगुर। भावना का भाड़ा मिलता है। कोई हनुमान को गणेश को याद करते हैं। तो उनका साक्षात्कार होता है। समझते बस हम साक्षात्कार से मुक्त हो जावेंगे। यह थोड़े ही जानते हैं हनुमान पुरी वा गणेश पुरी कहां होता है। जहां हम जावेंगे। अभी तुम बच्चों को सारी समझ मिली है। भक्ति है ही दुःख का रास्ता। ज्ञान है सुख का रास्ता। ज्ञान से सतयुग की राजाई मिलती है। अज्ञान से नर्कवासी बनने की राजाई। इस समय राजारानी तथा प्रजा सब नर्क के मालिक हैं। परन्तु यह किस को पता थोड़े ही है कि हम नर्कवासी हैं। जब कोई मरता है तो कहते भी हैं स्वर्गवासी हुआ। तो जब मरे तब स्वर्ग में जाये। इन बातों को तुम ने अभी समझा है। अभी तुम कहेंगे हम स्वर्गवासी बनने लिए स्वर्ग की स्थापना करने वाले बाप के पास बैठे हैं। ज्ञान की बूंद मिलती रहती है। थोड़ा भी ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जरूर जावेगा। बाकि है पुरुषार्थ पर। समझते हैं गंगा जल की एक लोटी भी लाने से पतित से पावन बन जावेंगे। लोटी भर कर ले जाते हैं। फिर रोजाना उनसे ड्राप पानी में मिलाये स्नान करते हैं। वह जैसे गंगा स्नान हो जावेगा। विलायत में भी गंगा जल ले जाते हैं। साधुओं को जेल में डाला तो उन्हों ने भी गंगा जल मांगा। सरकार को देना पड़े। तो बाप समझाते हैं माया बड़ी जोर से थप्पड़ लगाये देती है। विकर्म कर लेते हैं। इसलिए कचहरी करो। या तो आपे ही अपन कचहरी करो। अच्छा ही है। तुम अपन को आपे ही राजतिलक देते हो। तो अपनी जांच भी करनी है।

तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप श्रीमत देते हैं। ऐसे2 करो। मुझे याद करो। दैवी गुण धारण करो। जो करेंगे वह पावेंगे। तुम्हारी तो खुशी में रोमांच खडे हो जाने चाहिए। बेहद का बाप मिला है उनकी सर्विस में मददगार बनना है। अंधों को लाठी बनना है। जितना जास्ती बनेंगे उतना अपना ही कल्याण होगा। बाबा को घडी2 याद करना है। निष्ठा की बात नहीं। एक जगह बैठने की बात नहीं। चलते फिरते याद करना है। रेल में भी तुम सर्विस कर सकते हो। कोई भी गुरु गोसाई आदि हो बोलो आप किसके भक्त हो। ऊंच ते ऊंच कौन है। ऊंच ते ऊंच बाप ही है उनको याद करो। वर्सा उनसे ही मिलेगा। आत्मा को बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। कोई दान पुण्य करने से राजा के पास जन्म लेते हैं। सो भी अल्प काल के लिए। सदा तो राजा नहीं बन सकते। यहां तो बाप कहते हैं यह गैरन्टी है। वहां यह पता नहीं पडेगा कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा ले आये हैं। यह ज्ञान इस समय तुमको मिलता है। तो कितना अच्छी रीत पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ न करते हैं तो गोया अपने पर कुल्हाडी लगाते हैं। चार्ट लिखते रहो तो डर रहेगा। कोई2 लिखते भी हैं। बाबा देखेंगे तो शरमावेंगे। चाल चलन में बहुत फर्क रहता है। तो बाप कहते हैं गफलत छोडो। नहीं तो बहुत पछताना पडेगा। रोना पडेगा। अपने पुरुषार्थ का पिछाडी में सा0 जरूर होगा। फिर बारबार बहुत रोना पडेगा। क्या यह ही वर्सा मिलेगा। दासी जाये बनेंगे। आगे तो ध्यान में जाये सुनाते थे फलानी दासी है, यह है। फिर बाबा ने वह बन्द कर दिया। पिछाडी में फिर तुम बच्चों को सा0 होगा। सा0 बिगर सजा कैसे मिलेगा। कायदा ही नहीं। बच्चों को युक्तियां भी बहुत समझाई जाती हैं। पति मारते हैं, गुस्सा करते हैं। तुम हर्षित हो खडे रहो। बोलो हम पांव पडती है, हाथ जोडती है, हमको पवित्र रहने दो। हमको आवाज आता है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पहनो। माया जीते जगत जीत बनो। अब हम स्वर्ग के मालिक बनें या तुम्हारे कहने पर अपवित्र बन नर्क में जावें। बहुत प्यार नम्रता से समझाओ। मुझे नर्क में क्यों धकेलते हो। ऐसे बहुत बच्चियां हैं समझाते2 फिर आखरीन पति को ले आती हैं। फिर पति कहने लग पडता कि यह हमारा गुरु है। इसने हमको बहुत अच्छा रस्ता बताया। बाबा के आगे चरणों में आये गिरते हैं। तो बच्चों को बहुत2 गोठा बनना है। जो सर्विस करेंगे वही प्यारे लगेंगे। भगवान बाप आये हैं बच्चों को पास। उनको श्रीमत पर चलना है। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो तूफान लगने से गिर पडते हैं। ऐसे कच्चे हैं वह क्या काम के रहेंगे। यह पढाई कोई कामन नहीं है। और सब सतसंगों आदि में तो है कनरस। जिस से अल्प काल सुख मिलता है। यह बाप द्वारा तो 21 जन्मों का सुख मिलता है। बाप सुख का सागर शान्ति का सागर है। हमको भी बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब मिलेगा। इसलिए बैज सदैव पडा रहे। हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न... बनना है। किसको दुख तो नहीं देते हैं। आसुरी चलन तो नहीं चलते हैं। माया ऐसे काम कराती है बात मत पूछो। अच्छे2 घर वाले भी बतलाते थे माया ने यह विकर्म कराये लिया। कोई सच्च बताते हैं, कोई सच्च न बताने से सौ गुणा दण्ड खाये लेते। फिर वह आदत बढती जावेगी। बाप कहते हैं पाप किया है तो रजिस्टर में लिखो। और बताये दो। इनको बतलाने से तुम्हारे पाप आधा तो खलास हो जावेगा। सावधान भी करेंगे। सभा में सुनाने से आबरु जावेगी सुनावेंगे नहीं। छुपाये देंगे तो फिर करते रहेंगे। सराप मिल जाता है। न बतलाने से एक बार बदले सौ बार करते रहेंगे। बाबा कितनी अच्छी2 राये देते हैं परन्तु कोई2 को जरा भी असर नहीं होता। अपनी तकदीर को जैसे लात मारते हैं। बहुत2 नुकसान करते हैं। अन्त में सब को सा0 होगा। यह यह बनेंगे। क्लास से ट्रान्सफर होते हैं तो मार्क्स निकलती है ना। ट्रान्सफर होने पहले रिजल्ट निकलती है। तुम भी उपर क्लास में जाते हो। तो मार्क्स का पता पडेगा। फिर बहुत जार2 रोवेंगे। फिर क्या कर सकेंगे। रिजल्ट तो निकल गई है ना। तकदीर में जो थी सो लिया। बाबा सब बच्चों को सावधान करते हैं। इनको भी करते हैं। ऐसे नहीं कि यह पास हो गया है। कर्मातीत अवस्था अभी हो न सके। कर्मातीत अवस्था हो जाये तो फिर शरीर छोडना पडे। कुछ न कुछ विकर्म रहे पडे हैं। अच्छा बच्चों को गुड मार्निंग।